NIOS 12th Hindi (301) TMA Solved 2025-26

शिक्षक अंकित मूल्यांकन-पत्र (TMA)

GyanTech Guru Ji

NIOS BOARD

CLASS 12th

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-60 शब्दों में दीजिए।

(क) 'कबीर की भक्ति में पूर्ण समर्पण और शरणागति का भाव है।' सिद्ध कीजिए।

उत्तर:

कबीरदास जी की भक्ति निर्गुण और निराकार ब्रह्म की भक्ति है। वे ईश्वर को अपना स्वामी और स्वयं को उनका सच्चा सेवक मानते हैं। उनके अनुसार अहंकार (मैं) का नाश किए बिना ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं है। कबीर कहते हैं कि जब भक्त अपने अहंकार को मिटाकर पूरी तरह ईश्वर की शरण में चला जाता है, तभी उसे परमात्मा का सच्चा प्रेम प्राप्त होता है। उनका यह समर्पण निस्वार्थ, आडंबर रहित और पूर्ण शरणागति का प्रतीक है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-60 शब्दों में दीजिए।

(ख) डॉ. रघुवंश के जीवन से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? 'जिजीविषा की विजय' पाठ के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

'जिजीविषा की विजय' पाठ में डॉ. रघुवंश का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि मनुष्य अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति और अदम्य साहस से किसी भी कठिन परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर सकता है। डॉ. रघुवंश शारीरिक रूप से अक्षम होने के बावजूद कभी निराश नहीं हुए। उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता और अटूट आत्मविश्वास के बल पर साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट मुकाम हासिल किया। उनका जीवन सिखाता है कि सच्ची विकलांगता शरीर की नहीं, बल्कि सोच की होती है।

GyanTechGuru Ji , 9518616764, https://t.me/ThinkIndiaX

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 40-60 शब्दों में दीजिए।

(क) 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में मानवीकरण का प्रयोग किस प्रकार हुआ हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

भवानी प्रसाद मिश्र जी ने 'सतपुड़ा के घने जंगल' कविता में प्रकृति का सजीव और अत्यंत सुंदर मानवीकरण किया है। कवि ने जंगल के पेड़ों, लताओं और प्राकृतिक तत्वों को इंसानों की तरह व्यवहार करते हुए दिखाया है। उदाहरण के लिए, कवि कहता है: 'नींद में डूबे हुए से, ऊँघते अनमने जंगल।' यहाँ जंगल को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो गहरी नींद और आलस्य में डूबा हुआ है, जो मानवीकरण अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100-150 शब्दों में दीजिए।

(ख) यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में अभिव्यक्त जीवन-दर्शन की प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

महाभारत के वनपर्व से लिया गया 'यक्ष-युधिष्ठिर संवाद' आज के आधुनिक जीवन में भी अत्यधिक प्रासंगिक है। इस संवाद में युधिष्ठिर अपने धैर्य, ज्ञान और धर्म के माध्यम से यक्ष के जटिल और दार्शनिक प्रश्नों के उत्तर देते हैं। आज के समय में जहाँ मनुष्य भौतिकवाद, स्वार्थ और लालच में अंधा हो गया है, वहाँ यह संवाद हमें धर्म, सदाचार और विवेक का सही मार्ग दिखाता है।

यक्ष के प्रश्न जैसे 'दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?' का युधिष्ठिर द्वारा दिया गया उत्तर कि 'रोज़ लोगों को मरते देखकर भी इंसान खुद को अमर समझता है' आज भी पूरी तरह सत्य है। यह संवाद सिखाता है कि जीवन में धैर्य, क्षमा, दया और सत्य ही वास्तविक सफलता के आधार हैं। तनाव और भागदौड़ से भरी आज की दुनिया में युधिष्ठिर का संयम और नैतिक जीवन-दर्शन हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा और शांति प्रदान करता है।

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लगभग 100-150 शब्दों में दीजिए।

(ख) मंच संचालन में भाषा महत्वपूर्ण होती है। इस कथन के आलोक में मंच संचालक के भाषा संबंधी किन्ही चार गुणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

GyanTechGuru Ji , 9518616764, https://t.me/ThinkIndiaX

किसी भी कार्यक्रम की सफलता बहुत हद तक मंच संचालक (एंकर) पर निर्भर करती है और मंच संचालक का सबसे बड़ा और प्रभावशाली हथियार उसकी भाषा होती है। मंच संचालक के भाषा संबंधी चार प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं:

1. स्पष्टता और सरलता: मंच संचालक की भाषा बिल्कुल स्पष्ट और श्रोताओं की समझ में आने वाली होनी चाहिए। बहुत अधिक कठिन या क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग दर्शकों को उबा सकता है।

2. प्रवाहमयता **(Fluency):** बोलते समय भाषा में एक सहज प्रवाह होना चाहिए। बीच-बीच में अटकना, हकलाना या शब्दों को ढूँढना एक अच्छे संचालक की निशानी नहीं है।

3. अवसरानुकूल भाषा: संचालक को कार्यक्रम की प्रकृति (जैसे- शोक सभा, हास्य कवि सम्मेलन, या शैक्षणिक सेमिनार) के अनुसार अपनी भाषा के शब्दों और स्वर (Tone) का चयन करना चाहिए।

4. रोचकता और आकर्षण: श्रोताओं को बाँधे रखने के लिए भाषा में मुहावरों, छोटी कविताओं, चुटकुलों या प्रेरणादायक उद्धरणों (Quotes) का उचित और संतुलित प्रयोग होना चाहिए ताकि कार्यक्रम नीरस न हो।

प्रश्न 6. नीचे दी गई परियोजनाओं में से कोई एक परियोजना तैयार कीजिए।
(क) छायावाद और नई कविता के चार-चार कवियों का संक्षिप्त परिचय तथा उनकी प्रमुख रचनाओं का विवरण चित्र सहित प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

[छात्रों के लिए महत्वपूर्ण निर्देश: अपनी प्रैक्टिकल/असाइनमेंट फाइल में यहाँ दी गई जानकारी के साथ संबंधित कवियों के चित्र (Photos) अवश्य चिपकाएँ।]

भाग 1: छायावाद के चार प्रमुख कवि (छायावाद के चार स्तंभ)

1. जयशंकर प्रसाद:

परिचय: जयशंकर प्रसाद छायावाद के प्रवर्तक और सबसे प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनका जन्म 1889 में काशी में हुआ था। उनके काव्य में प्रेम, सौंदर्य और दर्शन का अद्भुत संगम है।

प्रमुख रचनाएँ: कामायनी (महाकाव्य), आँसू, लहर, झरना।

[यहाँ जयशंकर प्रसाद का चित्र चिपकाएँ]

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला':

परिचय: निराला जी का जन्म 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ था। इन्होने मुक्तक छंद का प्रवर्तन किया। इनके काव्य में जहाँ एक ओर ओज और विद्रोह है, वहीं दूसरी ओर करुणा भी है।

GyanTechGuru Ji , 9518616764, https://t.me/ThinkIndiaX

प्रमुख रचनाएँ: राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता, परिमल, अनामिका।

[यहाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का चित्र चिपकाएँ]

3. सुमित्रानंदन पंत:

परिचय: 'प्रकृति के सुकुमार कवि' के रूप में प्रसिद्ध पंत जी का जन्म 1900 में कौसानी (उत्तराखंड) में हुआ था। उनकी कविता में प्रकृति का अत्यंत कोमल और सजीव चित्रण मिलता है।

प्रमुख रचनाएँ: पल्लव, वीणा, गुंजन, लोकायतन, चिदंबरा।

[यहाँ सुमित्रानंदन पंत का चित्र चिपकाएँ]

4. महादेवी वर्मा:

परिचय: आधुनिक मीरा के नाम से विख्यात महादेवी वर्मा का जन्म 1907 में फर्रुखाबाद में हुआ था। उनकी कविताओं में रहस्यवाद और विरह की वेदना प्रमुख है।

प्रमुख रचनाएँ: यामा, निहार, रश्मि, नीरजा।

[यहाँ महादेवी वर्मा का चित्र चिपकाएँ]

भाग 2: नई कविता के चार प्रमुख कवि

1. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय':

परिचय: अज्ञेय जी नई कविता और प्रयोगवाद के शलाका पुरुष माने जाते हैं। उन्होंने 'तार सप्तक' का संपादन कर हिंदी साहित्य में एक नए युग की शुरुआत की।

प्रमुख रचनाएँ: कितनी नावों में कितनी बार, आँगन के पार द्वार, हरी घास पर क्षण भर।

[यहाँ अज्ञेय जी का चित्र चिपकाएँ]

2. गजानन माधव 'मुक्तिबोध':

परिचय: मुक्तिबोध नई कविता के एक अत्यंत सशक्त और जटिल कवि हैं। उनकी कविताओं में फैंटेसी (कल्पना) का अद्भुत प्रयोग हुआ है जो आम आदमी के संघर्ष को दर्शाता है।

प्रमुख रचनाएँ: चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल, ब्रह्मराक्षस।

[यहाँ गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का चित्र चिपकाएँ]

3. भवानी प्रसाद मिश्र:

परिचय: भवानी प्रसाद मिश्र जी को सहजता का कवि कहा जाता है। उन्होंने बोलचाल की भाषा में बहुत ही गहरी बातें अपनी कविताओं में पिरोई हैं।

प्रमुख रचनाएँ: गीत फरोश, बुनी हुई रस्सी, सतपुड़ा के घने जंगल।

GyanTechGuru Ji , 9518616764, https://t.me/ThinkIndiaX

[यहाँ भवानी प्रसाद मिश्र का चित्र चिपकाएँ]

4. कुँवर नारायण:

परिचय: कुँवर नारायण जी नई कविता के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। इनकी कविताओं में बौद्धिकता, दर्शन और वर्तमान समय के द्वंद्व का शानदार चित्रण मिलता है।

प्रमुख रचनाएँ: चक्रव्यूह, आत्मजयी, कोई दूसरा नहीं।

[यहाँ कुँवर नारायण जी का चित्र चिपकाएँ]